विषय - संस्कृत, डॉ० ओम प्रकाश आर्य
बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा) महाराजा कॉलेज, आरा।
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र दिनांक - 29/05/2020
कादम्बरी - शुकनासोपदेश - बाणभट्ट

गद्यांश × व्याख्या

तात चन्द्रापीड ! विदित वेदितव्यस्याधीत सर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। केवलञ्च निसर्गत एवाभानुभेद्यमरत्नालोकोच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।
अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। कष्टमनञ्जनवर्तिसाध्यम् अपरम् ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्।
सान्वय व्याख्या - (तात चन्द्रापीड) - वत्स चन्द्रापीड ! (विदित वेदितव्यस्य) जानने योग्य विषयों के ज्ञाता एवं (अधीतसर्वशास्त्रस्य) समस्त शास्त्रों का अध्ययन

Date
Page

किये हुए (ते) तुम्हें (अल्पमपि) थोड़ा भी (उपदेष्टव्यम्) उपदेश देना शेष (नास्ति) नहीं है। (केवलञ्च) लेकिन (यौवनप्रभवम् तमः) यौवन से उत्पन्न होनेवाला अन्धकार (निसर्गतः) स्वभाव से (एव) ही (अतिगहनम्) अत्यन्त गहन होता है। (अभानुभेद्यम्) जिसको न सूर्य से भेदा जा सकता है, (अरत्नालोकोच्छेद्यम्) न रत्नों के आलोक से दूर करने योग्य है, (अप्रदीपप्रभापनेयम्) और न ही ~~प्रदीप~~ दीपक के प्रकाश से उसे दूर किया जा सकता है।
(लक्ष्मीमदः) लक्ष्मी का भीषण मद (अपरिणामोपशमः) वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता।
(ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्) ऐश्वर्यरूप तिमिर रोग द्वारा उत्पन्न अन्धापन (कष्टमनञ्जनवर्तिसाध्यम्) अञ्जन की बत्ती से भी ठीक न होने वाला कष्टकर है।

भावार्थ- हे पुत्र चन्द्रापीड! समस्त ज्ञातव्य विषयों के ज्ञाता एवं समस्त शास्त्रों का अध्ययन किये हुए तुम्हें थोड़ा भी उपदेश देना शेष नहीं है। किन्तु यौवन से उत्पन्न होनेवाला मोह व अज्ञानरूपी अन्धकार स्वभाव से ही अत्यन्त गहन होता ~~होता~~ है जिसको न सूर्य से भेदा जा सकता है, न रत्नों के आलोक से उच्छेद किया जा सकता है और न ही

Scanned with CamScanner

शक्तिशाली दीपक के प्रकाश से उसे दूर किया जा सकता है।

धन सम्पत्ति का मद जीवनपर्यन्त शान्त नहीं होता। ऐश्वर्य रूप तिमिर रोग (मोतियाबिन्द) द्वारा उत्पन्न अन्धापन अञ्जन की बत्ती से भी ठीक न होने वाला अतएव अत्यन्त कष्टकर है।

<u>टिप्पणी</u>– विदितवेदितव्यस्य – विदितं वेदितव्यं यस्य सः तस्य। विद्+क्त = विदितम्, विद्+तव्यत् = वेदितव्यम् (क्तस्य च वर्तमाने अष्टा० २.३.६ इति षष्ठी) अधीतसर्वशास्त्रस्य = अधीतानि सर्वाणि शास्त्राणि येन सः (बहु०) तस्य। उपदेष्टव्यम् = उप+दिश्+तव्यत्। अभानुभेद्यम् – भानुना भेद्यम् भानुभेद्यम् (तृतीया तत्पु०) न भानुभेद्यम् अभानुभेद्यम् (नञ्) । भिद्+ण्यत् = भेद्यम् भेत्तुं शक्यम्। अरत्नालोकोच्छेद्यम् = रत्नानाम् आलोकः रत्नालोकः (षष्ठी त०) रत्नालोकेन उच्छेद्यं (उत्+छिद्+ण्यत्) रत्नालोकोच्छेद्यम् (तृ० तत्पु०) न रत्नालोकोच्छेद्यम् (नञ्०) अप्रदीपप्रभापनेयम् – प्रदीपप्रभया अपनेयं प्रदीपप्रभापनेयम् (तृ० तत्पु०) न प्रदीपप्रभापनेयम् (नञ्०)। यौवनप्रभवम् – यौवनं प्रभवः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य तत् (बहु०)। अपरिणामोपशमः – परिणामे (परि+नम्+घञ् = परिणामः = वृद्धावस्था) उपशमः (उप+शम्+घञ् = शान्ति, निवृत्ति, उपचार) यस्य स परिणामोपशमः (बहु०) न परिणामोपशमः (नञ्०)। दारुणः – दॄ+णिच्+उनन्, 'दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम्'। लक्ष्मीमदः = लक्ष्म्याः मदः (मद्+अप्) (ष० तत्पु०)। इति